• शुभ...

दरवाजे पर लगाएं ये चीजें

किसी भी व्यक्ति के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण और विशेष जगह होती है उसका घर। अपने घर में व्यक्ति सबसे ज्यादा आराम और शांति का अनुभव करता है। कुछ ही लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें विरासत में घर बना हुआ मिलता है। ज्यादातर लोग सालों मेहनत करते हैं, तब घर बना पाते हैं। हर व्यक्ति की चाहत होती है कि उसके घर में सुख-समृद्धि बनी रहे।

वास्तु शास्त्र में घर की सुख-समृद्धि के लिए कई उपाय बताए गए हैं, जिनको करने से घर में धन और समृद्धि बनी रहती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, अगर प्रमुख दरवाजे पर कुछ विशेष चीजें लगाई जाएं तो घर की सभी तरह की परेशानियों से छुटकारा मिलता है। घर से नकारात्मकता दूर रहती है और सकरात्मक उर्जा का प्रवाह बना रहता है।

▸ **स्वास्तिक या ओम का चिन्ह**-हिंदू धर्म में स्वास्तिक और ओम का चिन्ह सकारात्मकता और शुभता का प्रतीक माना जाता है। घर के प्रमुख दरवाजे पर इन्हें लाल या पीले कपड़े में बांधकर लटकाना चाहिए। इसे दरवाजे के दाईं ओर लगाना शुभ रहता है। हर दिन रोली का टीका लगाकर पूजा करनी चाहिए। ऐसा करने से घर से नकारात्मकता दूर रहती है. घर में शुभता का वास बना रहता है।

▸ **नारियल या समुद्री शंख**-प्रमुख दरवाजे पर नारियल या समुद्री शंख लगाना चाहिए। ये आसान और अचूक उपाय है। प्रमुख दरवाजे पर नारियल या समुद्री शंख लगाने से घर में समृद्धि और शुद्धता रहती है। ये माता लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है। इसे लाल कपड़े में बांधकर दरवाजे पर लटकाना चाहिए। रोज धूप दिखानी चाहिए. शंख को गंगाजल से साफ करना चाहिए। ऐसा करने से घर में नकारात्मकता नहीं आती।

▸ **नींबू-मिर्च का तोरण**-शनिवार या मंगलवार को घर के प्रमुख दरवाजे पर नया नींबू-मिर्च का तोरण लटकाना चाहिए। साथ में काला कपड़ा जोड़ना चाहिए, लेकिन ध्यान रखें कि ये घर के अंदर की ओर न हो। इससे घर के वातावरण में शुद्धता रहती है। नजर दोष का प्रभाव खत्म होता है।

• भाग्य...

गुरुवार को करें ये काम

हिंदू धर्म में सप्ताह के सातों दिनों का अलग-अलग देवताओं से संबंध बताया गया है। गुरुवार का दिन भगवान विष्णु और बृहस्पति देव को समर्पित माना जाता है। इस दिन किए गए विशेष उपाय न केवल भाग्य के दरवाजे खोलते हैं, बल्कि करियर, नौकरी और आर्थिक स्थिति में भी उन्नति लाते हैं। शास्त्रों के अनुसार, जो व्यक्ति श्रद्धा और आस्था से गुरुवार के दिन भगवान विष्णु की पूजा करता है, उसके जीवन से दरिद्रता और बाधाएं दूर हो जाती हैं. आइए जानते हैं गुरुवार के दिन किए जाने वाले कुछ सरल लेकिन उपाय जो नौकरी में तरक्की दिला सकते हैं।

▸▸ **पीले वस्त्र धारण करें :** गुरुवार के दिन पीले रंग के वस्त्र पहनना बहुत शुभ माना जाता है। यह रंग भगवान विष्णु और बृहस्पति देव दोनों को प्रिय है।

▸▸ **पूजन और मंत्र जाप :** सुबह जल्दी उठकर स्नान करें। भगवान विष्णु के मंदिर या घर में उनकी मूर्ति/तस्वीर के सामने घी का दीपक जलाएं। उन्हें पीले फूल, हल्दी, चने की दाल और गुड़ अर्पित करें। इस दिन 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय नम:' या 'ऊं बृं बृहस्पतये नम:' मंत्र का कम से कम 108 बार जाप करें।

▸▸ **विष्णु चालीसा या सहस्त्रनाम का पाठ :** पूजा के दौरान विष्णु चालीसा या विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करना अत्यंत फलदायी होता है। इससे भगवान शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

▸▸ **केसर का तिलक :** माथे पर केसर और चंदन का तिलक लगाने से गुरु मजबूत होता है और धन प्राप्ति के रास्ते खुलते हैं।

▸▸ **केले के पेड़ की पूजा :** गुरुवार के दिन केले के पेड़ की पूजा का विशेष महत्व है। जल में एक चुटकी हल्दी मिलाकर केले के पौधे में अर्घ्य दें। इस दौरान थोड़ा सा गुड़ और चने की दाल भी अर्पित करें। ध्यान रखें कि केले का सेवन इस दिन न करें।

▸▸ **पीपल को जल अर्पित करें :** पीपल को देव वृक्ष माना जाता है, जिसमें भगवान विष्णु का वास होता है। गुरुवार की सुबह पीपल के पेड़ को जल चढ़ाएं और हल्दी या गुड़ डालें। माना जाता है कि यह उपाय आपके आत्मबल को बढ़ाता है और कार्यक्षेत्र में बिगड़े रिश्ते सुधारता है।

दान और पवित्र स्नान का महत्व

▸▸ **पीली वस्तुओं का दान :** कुंडली में गुरु की स्थिति को मजबूत करने के लिए गुरुवार के दिन पीले रंग की चीजों का दान करें।

▸▸ आप चने की दाल, हल्दी, बेसन, केला, मक्का या पीले रंग के कपड़े किसी मंदिर या गरीब को दान कर सकते हैं।

▸▸ बेरोजगार लोग नौकरी की तलाश में हैं तो उन्हें मंदिर में केसर और चने की दाल का दान करना चाहिए।

▸▸ **हल्दी वाले पानी से स्नान :** अपने नहाने के पानी में एक चुटकी हल्दी डालकर स्नान करें। इससे गुरु दोष दूर होता है और विष्णु जी की कृपा मिलती है. स्नान के समय 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय नम:' मंत्र का जाप करें।

▸▸ **धार्मिक पुस्तकों का दान :** धार्मिक पुस्तकें जैसे विष्णु चालीसा, राम चालीसा या अन्य पवित्र ग्रंथों का दान करना भी नौकरी और व्यवसाय में आ रही बाधाओं को दूर करता है।

चिरंजीवी देवपुरुष

माना जाता है कि ये देव पुरुष कलयुग में मौजूद हैं। ये सभी चिरंजीवी कहे जाते हैं। इन चिरंजीवियों की कथाएं इनकी तरह ही अमर हैं, जो आज भी लोगों को प्रेरणा देती हैं।

पौराणिक कथाओं में और धर्म शास्त्रों में सात चिरंजीवियों के बारे में वर्णित है।

परशुराम जी जगत के पालनहार भगवान श्रीहरि विष्णु के छठवें अवतार माने जाते हैं। उनका जन्म सतयुग में बैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हुआ था...

हिंदू धर्म शास्त्रों में बताया गया है कि कई देव पुरुष अमर हैं। चिरंजीवी उसे कहा जाता है जो अमर होता है। अर्थात जिनका कभी अंत नहीं होता। माना जाता है कि ये देव पुरुष कलयुग में मौजूद हैं। ये सभी चिरंजीवी कहे जाते हैं। इन चिरंजीवियों की कथाएं इनकी तरह ही अमर हैं, जो आज भी लोगों को प्रेरणा देती हैं। पौराणिक कथाओं में और धर्म शास्त्रों में सात चिरंजीवियों के बारे में वर्णित है। आइए जानते हैं कि ये सात चिरंजीवी कौन-कौन हैं?

● **परशुराम जी**-परशुराम जी जगत के पालनहार भगवान श्रीहरि विष्णु के छठवें अवतार माने जाते हैं। उनका जन्म सतयुग में बैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हुआ था। बताया जाता है कि परशुराम जी का नाम पहले राम था। इन्होंने भगवान शिव की घोर तपस्या की, जिसके बाद भगवान शिव मे प्रसन्न होकर फरसा प्रदान किया, जिसके बाद इन्हें परशुराम कहा जाने लगा। माना जाता है कि भगवान परशुराम जी आज भी इस धरती पर हैं।

● **हनुमान जी**-भगवान राम के परम भक्त अंजनी पुत्र वीर हनुमान को भी अमरता का वरदान मिला है। त्रेता युग के बाद द्वापर युग में भी हनुमान जी का उल्लेख मिलता है। उन्होंने महाभारत के युद्ध से पहले भीम का घमंड तोड़ा था। यही नहीं महाभारत के युद्ध के दौरान हनुमान जी अर्जुन के रथ के ऊपर बैठे थे। हनुमान जी जब प्रभु श्रीराम का संदेश लेकर सीताजी के पास अशोक वाटिका गए थे, तब सीताजी ने उनकी भक्ति और राम के प्रति समर्पण को देखते हुए यह वरदान दिया था। माना जाता की हनुमान जी आज भी पृथ्वी पर ही वास करते हैं और भगवान राम की भक्ति में लीन हैं।

● **राजा बलि**-असुरों के राजा बलि महान दानी थे। उन्होंने अपने दान के अहंकार में इंद्रलोक पर आधिपत्य चाहा। तब भगवान विष्णु वानम अवतार में उनसे दान मांगने पहुंचे। वामन भगवान ने राजा बलि से तीन पग भूमि मांगी. भगवान ने दो पग में तीनों लोक नाप लिए और तीसरा पग राजा बलि के सिर पर रखा। इसके बाद उनको पाताल लोक भेज दिया गया। मान्यता है कि राजा बलि आज भी पाताल लोक में हैं।

● **अश्वत्थामा**-गुरु द्रोणाचार्य जी का पुत्र अश्वत्थामा महाभारत काल से इस धरती पर है। महाभारत के दौरान भगवान श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा के माथे से मणि निकलवा ली थी और उसे श्राप दिया था कि वो दुनिया के अंत तक जीवित रहेगा। माना जाता है कि अश्वत्थामा आज भी जीवित हैं।

● **महर्षि व्यास**-महर्षि व्यास, ऋषि पराशर और माता सत्यवती के पुत्र थे। महर्षि वेदव्यास चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) के रचनाकार हैं। उन्होंने 18 पुराणों की भी रचना की है। महाभारत जैसे विस्तृत ग्रंथ की रचना भी वेद व्यास द्वारा की गई है। इन्हें भी अमरता का वरदान प्राप्त है।

● **कृपाचार्य**-कृपाचार्य जी एक महान ऋषि थे। कृपाचार्य कौरवों के कुलगुरु थे। वो द्रोणाचार्य की पत्नी के भाई थे। महाभारत के युद्ध में ऋषि कृपाचार्य जी ने कौरवों की ओर से युद्ध किया था। इनको भी चिरंजीवी का वर प्राप्त है।

● **विभीषण**-रावण के छोटे भाई विभीषण ने अपने सगे भाई के विरुद्ध जाकर धर्म के हित में भगवान राम का साथ दिया था। रावण के वध के बाद भगवान राम ने विभीषण को लंका राजपाट सौंपा था। विभीषण को भी चिरंजीवी होने का वरदान मिला है। माना जाता है आज भी विभीषण पृथ्वी लोक पर मौजूद हैं।

■ पं. नित्यानंद

• वास्तु ...

मनी प्लांट

वास्तु की दृष्टि में मनी प्लांट को एक शुभ पौधे के रूप में देखा जाता है। अगर वास्तु नियमों का ध्यान रखते हुए इस पौधे को घर में लगाया जाए, तो इससे पॉजिटिव एनर्जी का फ्लो बढ़ता है। वास्तु शास्त्र में यह माना गया है कि मनी प्लांट को कभी भी उत्तर-पूर्व दिशा में नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि इससे आपको आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वास्तु शास्त्र में माना गया है कि मनी प्लांट की बेल को हमेशा ऊपर की ओर बढ़ने देना चाहिए। ये बेल जमीन को नहीं छूनी चाहिए। ऐसा करने से धन और समृद्धि के योग बनने लगते हैं। ध्यान रखें कि आपका मनी प्लांट का पौधा सूखे न। इसके लिए आप समय-समय पर सूखे और पीले पत्तों को हटाते रहें। मनी प्लांट को घर के अंदर रखना ज्यादा शुभ होता है। कई लोग मनी प्लांट को चोरी करके लगाना शुभ मानते हैं, लेकिन वास्तु शास्त्र में इस तरीके को गलत बताया गया है। आप इसे किसी कांच की बोतल या गमले में लगा सकते हैं।

• मंदिर...

मंदिर को घर की उत्तर-पूर्वी दिशा में बनवाना शुभ माना जाता है। इस दिशा में मंदिर होने से घर-परिवार में सुख-समृद्धि और शांति बनी रहती है और पूजा का पूर्ण फल प्राप्त होता है। एक बात का खास ध्यान रखें कि मंदिर बेडरूम या बाथरूम के पास नहीं होना चाहिए। इससे आपको नकारात्मक परिणाम मिल सके हैं। ग्राउंड फ्लोर पर मंदिर रखना सबसे उत्तम माना गया है। बेसमेंट, सीढ़ियों के नीचे, मुख्य द्वार के सामने या शौचालय के पास मंदिर नहीं होना चाहिए।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित